स्वराज ज्ञान पंचायत के लिए विषय

चित्रा सहस्रबुद्धे

मुख्य विषयों के कुछ बिंदु दिए हुए हैं जिनसे संवाद को दिशा मिलने की उम्मीद है. संवाद का फलक व्यापक हो और साथ ही एक दिशा का भी बोध हो इन दोनों बातों का ध्यान रखते हुए संवाद के विषयों का चयन किया गया है और उनके अंतर्गत विविध बिन्दुओं का उल्लेख किया है.

1. किसान आन्दोलन और खाद्य स्वराज
   a. किसान आन्दोलन ने यह कहकर कि ''रोटी को तिजोरी में नहीं बंद होने देंगे ''खाद्य और व्यापार के बीच सम्बन्ध पर एक बड़ा विचार दिया है.
   b. किसान आन्दोलन ने अपने अराजनीतिकता के विचार के जरिये समाज की शक्ति की ओर ध्यान खींचा है और यह राज और बाज़ार से मुकाबला लेने लायक बने, इसका आग्रह प्रस्तुत किया है. यह स्वराज के बारे में सोचने का और कार्य करने का एक बड़ा प्रस्थान बिंदु देता है.
   c. खाद्य स्वराज सभी को पोषक आहार हासिल करने की व्यवस्था है.
   d. खाद्य स्वराज में अनाज का उत्पादन और उपलब्धता बाज़ार के दबावों से मुक्त होने चाहिए.
   e. ऐसी खाद्य नीति को बनाने में किसानों और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो. इन समाजों के ज्ञान के आधार पर ब्लाक स्तर पर खाद्य स्वराज हासिल करने की नीतियों पर पंचायतें हों.
   f. अनाज और दालों का भण्डारण और प्रसंस्करण स्थानीय हो और इसे छोटे और पारिवारिक उद्यमों के मार्फ़त संगठित किया जाये. महिलाओं को इन उद्यमों में वरीयता मिले.
   g. जौ, बाजरा, ज्वार, रागी जैसे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा मिले.
   h. मछली उत्पादन को स्थानीय ज्ञान और ज़रूरतों के मुताबिक संगठित किया जाये.
   i. कृषि उत्पादन उद्योगों को कच्चा माल न होकर, जीवनयापन के सतत संवर्धन का संसाधन बनाना चाहिए.
   j. अनाजों के उत्पादन की किसी भी तकनीकी को किसान समाजों में व्यापक चर्चा और राय के बाद ही लाया जाना चाहिए.
   k. अनाज उत्पादन की खेती और उससे जुड़े उद्यमों में कार्यरत लोगों की आय सरकारी कर्मचारी के जैसी होनी चाहिए.

2. गरीबी का इलाज लोक आर्थिकी
   a. लोक आर्थिकी का आधार लोकविद्या में होता है. लोकहित, लोकनीति, लोकशक्ति और लोकस्मृति इसके सहयोगी विचार हैं.
   b. लोक आर्थिकी के लिए ज़रूरी है कि बाज़ार स्थानीय हों और उनमें गांवों और बस्तियों का बड़ा दखल हो.
   c. स्थानीय बाजारों को सुदृढ़ और स्थानीय उद्योगों पर आधारित बनाया जाए.
   d. स्थानीय ज्ञान और हुनर को इन बाज़ारों में वरीयता प्राप्त हो.
   e. स्थानीय बाज़ारों में स्थानीय सामानों का हिस्सा 80 फीसदी से कम न हों.
   f. इन बाजारों में सहयोग की भूमिका प्रतिस्पर्धा से ज्यादा हों.
   g. कर नीति और मुद्रा प्रणाली ऐसी हो, जिससे स्थानीय बाज़ारों को गति मिले.

3. सामाजिक न्याय आन्दोलन और विविध समाजों की ज्ञान परम्परायें
   a. ज्ञान, आय और रोज़गार के आपसी रिश्ते
   b. विविध समाजों के ज्ञान की भागीदारी के रास्ते
   c. स्थानीय स्तर पर विविध समाजों को साथ लेकर भाईचारा ज्ञान पंचायतें बनें .
   d. समाज बनाम जाति के द्वंद्व

4. जल-जंगल-ज़मीन आन्दोलन और स्थानीय प्रशासन
   a. समाजों/लोगों का विस्थापन नहीं होना चाहिए. विस्थापन का अर्थ है उपनिवेशीकरण.
   b. प्रशासनिक कार्यों में स्थानीय समाजों की प्रकट भूमिका हो.
   c. जल, जंगल और ज़मीनों के व्यवस्थापन और प्रशासन में स्थानीय समाज की ज्ञान पंचायतों की भागीदारी सुनिश्चित हो.
   d. प्रकृति पूंजीवादी उपक्रम का संसाधन नहीं है.

5. पर्यावरण आंदोलन और स्थानीय ज्ञान/ तकनीकी
   a. जल, वायु, ध्वनि और मिट्टी के प्रदूषण को रोकने के स्थानीय तौर-तरीके
   b. नगर व्यवस्था में पर्यावरण सुरक्षा के आधार और साधन
   c. गाँव और शहर के रिश्तों का संतुलन
   d. स्थानीय तकनीकी और व्यवस्थाओं को बढ़ावा
   e. पर्यावरण और जलवायु की बहस में स्वदेशी दर्शन की भूमिका.
   f. खनन, बिजली उत्पादन और बांध निर्माण के पैमाने और कसौटियां

6. लोकतंत्र बनाम स्वराज
   a. लोकतंत्र बनाम स्वराज: जीवनमूल्य, तर्क, ज्ञान और सक्रियता (चेतना)
   b. राज की सत्ता और समाज की शक्ति के बीच संतुलन.
   c. पूंजीवादी राजनीति और लोकनीति के ज्ञान आधार
   d. स्वराज परम्परायें
   e. समाज संगठन की विविध परम्पराएँ
   f. असहयोग के समकालीन रूप : बौद्धिक सत्याग्रह

7. राजनीतिक विमर्श का कला मार्ग
   a. प्रकृति और समाज के प्रति कला का दृष्टिकोण
   b. सृजन के सन्दर्भ में रचना, विश्लेषण, आलोचना का स्थान
   c. शासन प्रशासन में कलाकारों को अधिक स्थान मिलें.
   d. कला दर्शन सार्वभौमिक होता है: शासन, स्वशासन, राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, आदि सभी पर कला दृष्टि से एक राय बनती है.

8. कारपोरेट राज बनाम स्वराज: समाज के दो मॉडल
    a. हवाई अड्डा बनाम खेती: विकास के दो विकल्प
    b. बड़े नगर, बड़े बाँध, बड़े अस्पताल, बड़े बाज़ार, बड़े उद्योग ... और उनके विकल्प
    c. विलासपूर्ण और दबदबे की ज़िन्दगी बनाम सामान्य जीवन की प्रतिष्ठा
    d. विशेषज्ञों की विशेष स्थिति बनाम सभी के श्रम और ज्ञान की प्रतिष्ठा.
    e. राष्ट्रवाद बनाम सामाजिक सरोकार

9. सामाजिकता बनाम व्यक्तिवाद(पूर्ण बनाम खंडीय): दर्शन की दो वृत्तियाँ
    a. लोकविद्या दर्शन बनाम पूंजीवादी दर्शन
    b. स्वायत्तता बनाम स्वतंत्रता

10. लोकविद्या बनाम साइंस : ज्ञान की दो धाराएँ
    a. संगठित ज्ञान का राज से और लोकविद्या का स्वराज से रिश्ता.
    b. विविध ज्ञान की धाराओं में भाईचारा हो. यानि सहयोग हो प्रतिस्पर्धा नहीं.
    c. ज्ञान पंचायतों में विविध ज्ञान धाराओं के तर्क, सिद्धांत, मूल्य और पद्धतियों पर चर्चा हो.
    d. समाज की व्यवस्था और सञ्चालन में विविध ज्ञान धारायें शामिल की जाएँ

11. समाज में ज्ञान और शिक्षा/चिकित्सा की व्यवस्थाओं के बीच गतिशील रिश्ता हो
    a. समाज में ज्ञान और सेवा के बीच रिश्ते की पहचान
    b. शिक्षा नीति और स्वास्थ्य नीति बनाने में लोकविद्या को समुचित स्थान मिलना चाहिए.
    c. शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा के औपचारिक तरीकों के सीमाओं की पहचान
    d. लोकस्वास्थ्य परंपरा और सामान्यतः लोकविद्या की औपचारिक पहचान के रास्ते बनें

12. लोकस्मृति बनाम इतिहास
    a. सत्य का सामाजिक सृजन बनाम सत्य का निरपेक्ष अन्वेषण
    b. कुल स्मृति, ग्राम स्मृति, समाज स्मृति, का सार्वजनिक दुनिया में महत्त्व. जैसे कला, शासन, चिकित्सा, खेती, वितरण, शिक्षा आदि में.

13. बौद्धिक सत्याग्रह
    a. लोकविद्या आधारित तर्कों एवं मूल्यों की सामाजिक प्रतिष्ठा का आग्रह
    b. लोकविद्या के कोण से साइंस और राज के गठबंधन पर सवाल
    c. वैकल्पिक राजनीति नहीं बल्कि राजनीति के विकल्प की खोज का मार्ग

विद्या आश्रम, सारनाथ
2 अप्रैल 2023